

# स्कूल तो खुल गए हैं लेकिन...

## माया पाटीदार

कोविड-19 के चलते स्कूल लम्बे समय तक बन्द रहे। लम्बा समय क्या कहें, सालभर से भी ज्यादा। स्कूल बन्द होने के बाद भी शिक्षक शालाओं में उपस्थित होते और कुछ हद तक, बच्चों से सम्पर्क कर उन्हें पढ़ाई में मदद करते रहे। लेकिन स्कूल तो स्कूल ही होता है। एक स्वच्छन्द माहौल, साथ में बैठना, सीखना, खेलना, गीत-संगीत – इस सबकी कमी लॉकडाउन के दौरान सबने खूब महसूस की। पहले तो मुझे भी शाला का समय बस एक दिनचर्या का हिस्सा ही लगता था, लेकिन शाला बन्द होने के बाद मैंने महसूस

किया कि वास्तव में, शाला के वो 6-7 घण्टे मुझे और बच्चों को एक आज़ादी का एहसास दिलाते थे।

खैर, शाला दोबारा शुरू हुई। बच्चे भी धीरे-धीरे करके आने लगे। शालाएँ लम्बे समय तक बन्द रहने का असर हम सीधे तौर पर बच्चों के सीखने पर देख रहे हैं। कक्षा-3 के जो बच्चे आज हमारे पास आए हैं, उनको कक्षा-1 व 2 की अवधारणाओं को ठीक-से समझने का अवसर ही नहीं मिला है या यूँ कहें कि कई अवधारणाओं पर उनके साथ काम ही नहीं हुआ है। जिन बच्चों के साथ पहले कुछ काम हुआ भी था,



तालाबन्दी के कारण वे उसमें से भी बहुत कुछ भूल गए हैं। कक्षा-3 के हिसाब से देखती हूँ तो महसूस होता है कि कुछ बच्चों के साथ शब्द-मात्रा की पहचान करवाने की गतिविधियों को दोबारा करवाना ठीक रहेगा। इसी तरह गणित में भी संख्याओं की पहचान, बड़ी संख्या, छोटी संख्या पता लगाने आदि की गतिविधियाँ करवाई जानी चाहिए। इन सबमें बच्चों का उत्साह मुझे कुछ कर गुज़रने के लिए प्रेरित कर रहा था।

परन्तु एक चुनौती बच्चों को लगातार चार घण्टे कक्षा में बैठाए रखने की भी थी। बच्चों ने लम्बा समय घर में बिताया था। मोहल्ला क्लास में भी हम बच्चों को सिर्फ एक या दो घण्टे बैठाकर पढ़ाते थे जिसकी उन्हें आदत हो गई थी।

कक्षा में बच्चों के साथ जुड़ाव बनाने के लिए, बच्चों को मानसिक और शारीरिक रूप से जोड़े रखने की ज़रूरत महसूस हो रही थी। इस जुड़ाव के लिए जो सबसे अच्छा तरीका समझ आ रहा था, वह था कि छोटे बच्चों के साथ संवाद किया जाए। यदि यह संवाद उनकी स्थानीय बोलियों में हो तो शिक्षक एवं बच्चों के बीच अपनत्व की भावना बढ़ती है। इससे बच्चे अपने मन की बातों को - अपने अनुभवों को और घटनाओं को सहजता-से बता पाते हैं।

चूँकि कोविड के चलते बच्चों ने

लगभग दो साल का समय अपने परिवार के साथ ही बिताया था, इसलिए काफी सारे बच्चे घर में लगातार निमाड़ी बोली के सम्पर्क में थे। मेरा कक्षा में यही प्रयास रहा कि मैं बच्चों से निमाड़ी में ही संवाद करूँ। इस तरह के प्रयास से मैं बच्चों से खुलकर जुड़ पा रही थी।

कक्षा में आने वाले बच्चों को अकादमिक स्तर पर उन कक्षाओं के समकक्ष लाना, एक प्रमुख चुनौती थी (इसे बोलचाल में लर्निंग लॉस या लर्निंग गेप कहते हैं)। इसके लिए मेरी रणनीति यह थी कि भाषा और गणित की विविध गतिविधियाँ करते हुए, बच्चों को पिछली कक्षाओं की कुछ दक्षताओं में निपुण बना सकूँ। मुझे मेरी कक्षा में लर्निंग लॉस को कम करने में पहले हथियार के रूप में मातृभाषा ही नज़र आ रही थी, और दूसरा, बच्चों के साथ मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करने वाले खेला। यहाँ एक बात कहना चाहूँगी कि हम बार-बार लर्निंग लॉस की बात करते हैं जिसे सहजता-से पढ़ाई से जोड़ दिया जाता है। लेकिन कोविड की वजह से बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य भी डगमगाया है। कइयों के घर पर या मुहल्ले में कोविड की वजह से परिजनों, रिश्तेदारों या परिचितों की मौत हुई है। इस सबका बच्चों पर गहरा असर पड़ा है। बच्चे दोबारा कक्षा में रम जाएँ, यह भी महत्वपूर्ण है।

## कक्षा के भीतर खेलकूद

मैंने अपनी कक्षा में इन दोनों गतिविधियों पर ही काम करना शुरू किया। कक्षा शुरू होते ही रोज़ 30 मिनट का समय खेलों को दिया जाने लगा। कभी बच्चों की कमर में रिंग डालकर घुमाने की प्रतियोगिता करवाती, तो कभी, सबसे पहले कौन रंगीन ब्लॉक जोड़कर आकृति बनाएगा और कभी साँप-सीढ़ी, कुर्सी-दौड़, लीडर, रूमाल झपट्टा। कुछ खेल गणित की अवधारणाओं को सीखने में मदद के लिए होते थे। इस तरह हम दो टीम बनाकर भी खेलते थे। जो बच्चे खेल में जीतते, उनके लिए मैंने इनाम भी रखे थे। ये इनाम कोई महँगे तोहफे नहीं थे बल्कि चिन्दियों से बने बैग थे। ये मैंने

लॉकडाउन के दौरान अपनी कक्षा के बच्चों को याद करते हुए सिले थे। इस तरह के छोटे-छोटे प्रयासों से कक्षा में बच्चों की उपस्थिति बेहतर हो रही थी।

खेल बच्चों की एकाग्रता बढ़ाते हैं। लेकिन इन से कक्षा में अराजकता फैलने का जोखिम भी रहता है। इसलिए कक्षा में अराजकता कम करने व एकाग्रता बढ़ाने के लिए अपनी कक्षा में मिलकर तय किया था कि हम कुछ नियम बनाएँगे ताकि सभी शान्ति बनाकर रख सकें। हमने 'स्टेच्यू' नाम का एक खेल बनाया। जब भी कक्षा में ज़्यादा शोर होता, मैं बच्चों को 'स्टेच्यू' बोल देती। बच्चे जिस अवस्था में होते, वैसे ही बैठकर चुप हो जाते थे। इस तरह का नियम



बनाने का उद्देश्य कक्षा में बच्चों को सजा देना नहीं बल्कि उनकी एकाग्रता बढ़ाना एवं व्यवस्था बनाए रखना ही था।

## निमाड़ी बोली का कक्षा में उपयोग

बच्चों को पढ़ने-लिखने से कैसे जोड़ा जा सकता है, इसकी जद्दोजहद भी परेशान कर रही थी। स्कूल की शुरुआत में मैंने कक्षा-1 से 3 के बच्चों को, उनके परिवेश की मातृभाषा (निमाड़ी) में कुछ सुनाने के लिए कहा लेकिन उनको कक्षा में अपनी घरेलू भाषा बोलने में झिझक थी। इसलिए मैंने कक्षा में निमाड़ी भाषा में उनसे बात करना शुरू कर दिया, जैसे-

तु जिमि लियो? (आपने खाना खा लिया?), बाई घर मऽ काई करी रई? (घर में मम्मी क्या कर रही हैं?)

इससे बच्चों की झिझक में कुछ कमी आई। मेरा हर दिन प्रयास रहता है कि कक्षा में निमाड़ी में संवाद करूँ। एक दिन मैंने पुस्तकालय की एक किताब में से बच्चों को कविता सुनाई। फिर बच्चों को भी कविता सुनाने को कहा। उन्होंने अपनी घरेलू भाषा में बहुत सुन्दर कविताएँ सुनाई। मैंने सभी बच्चों को एक साथ लय-ताल, हाव-भाव के साथ कविता गाने को कहा। बच्चे उत्सुकता के साथ मस्ती में गा रहे थे।

“नानी-सी गाय,  
टुबुक-टुबुक जाय।  
देखजे म्हारा भाय,  
कई घर मऽ नी घुसी जाय।”  
बच्चों के साथ ही इस कविता को आगे बढ़ाने के प्रयास में कुछ और वाक्य बनाए गए। जैसे:

“नानी-सी पतंग,  
फर्र-फर्र जाय।  
देखजे म्हारा भाय,  
कई सट-सी नी कटी जाय।”

“नानी-सी बोटल,  
गड़बड़ती-गड़बड़ती जाय।  
देखजे म्हारा भाय,  
कई पानी नी ढुकी जाय।”

एक दूसरी निमाड़ी कविता:

“एक बजी गई,  
भैसी छुटी गई।  
पीयूष नऽ दगड़ो मार्यो,  
मटकी फूटी गई।”

बच्चों ने भी इससे मिलती-जुलती कविता बनाई -

“चार बज गई,  
बकरी छुटी गई।  
जिगर नऽ दगड़ो मार्यो,  
टंकी फूटी गई।”

फिर मैंने कक्षा-3 के बच्चों को एक गोले में बैठाया और बच्चों द्वारा निमाड़ी में गाई गई कविताओं को बोल-बोलकर लिखने लगी ताकि बच्चे इन कविताओं को लिखित रूप में भी देख सकें और समझ पाएँ कि जो वे

बोल रहे थे, उसे लिखा भी जा सकता है। इन कविताओं पर चित्र बनाने की जिम्मेदारी कक्षा-1 व 2 के बच्चों को दे दी गई। फिर कविताओं को लिखकर दीवार पर चस्पा कर दिया गया।

अब इन कविताओं को कक्षा तीन के बच्चों को स्केल रखकर ऊँची आवाज़ में पढ़ने का अभ्यास भी करवाया गया ताकि वे इन शब्दों को देखते रहें। कोविड काल के दौरान मेरी कक्षा की दीवारों ने भी बहुत कुछ खोया था। दीवार पर चिपकी लिखित सामग्री बच्चों की पढ़ाई में मदद करने के साथ-साथ दीवारों के खालीपन को भी दूर कर रही थी। मेरा उद्देश्य था कि बच्चों को प्रिंटरिच माहौल में रहते हुए, लिखित भाषा से जुड़ने के सार्थक मौके दे सकूँ।

मैं चाहती थी कि इस तैयार सामग्री द्वारा मौखिक भाषा से ध्वनियों पर काम करवा सकूँ। इसके लिए कक्षा-1 से 3 के सभी बच्चों को गोले में बिठाकर एक गतिविधि करवाई गई। मैं यहाँ तीनों कक्षाओं के साथ इस काम को इसलिए कर रही थी ताकि कक्षा-1 व 2 के बच्चे मौखिक वर्ण की ध्वनि के लिखित रूप से परिचित होने से पहले उसके मौखिक रूप से परिचित हो सकें। कक्षा-3 के बच्चे इन मौखिक ध्वनियों से परिचित थे, इसलिए उन्होंने लिखने की ओर कदम बढ़ाए। मैंने कविता से ही एक

शब्द लेकर उच्चारित किया, 'मटकी' और बच्चों से पूछा, 'मटकी' शब्द में पहली ध्वनि क्या है?"

उन्होंने कहा, "म"

मैंने कहा, "क्या आप 'म' से शुरू होने वाले और भी शब्दों को बता सकते हैं?" सभी बच्चों ने बारी-बारी से 'म' से शुरू होने वाले शब्द बताए, जैसे- मामा, मावा, मगरमच्छ, मछुआरा, मम्मी आदि।

मैं उनके द्वारा बोले गए शब्दों को बोर्ड पर लिखती गई और बाद में प्रत्येक द्वारा बताए गए शब्दों को पहचानकर, गोला लगाने के लिए कहा। कुछ बच्चों ने आसानी-से अपने कहे शब्दों पर गोला लगा लिया तो कुछ ने साथी बच्चों की मदद से। इस प्रकार बच्चों ने रोचकता के साथ 'म' से शुरू होने वाले ढेर सारे शब्दों के मौखिक और लिखित रूपों को जाना।

फिर मैंने कक्षा-3 के बच्चों से कहा कि 'म' अक्षर जिन शब्दों के मध्य में और जिन शब्दों के अन्त में आए, वे उनको भी बोलकर व लिखकर बताएँ। बच्चों ने प्रयास किया,

निखिल - मकान

जिगर - कमल

पियूष - शाम

मैंने बच्चों से कहा, "आप इन शब्दों के चित्र बनाकर, उनके नाम नीचे लिखने का प्रयास करें।" बच्चों ने इन शब्दों के चित्र बनाकर, उनके नाम नीचे लिखते हुए, उन्हें दीवार

पर चिपका दिया। हमारी कक्षा भी प्रिंट-रिच होती जा रही थी। मेरी कक्षा में ऐसे तबके के बच्चे हैं जो आर्थिक और सामाजिक रूप से हाशिए पर होने की पीड़ा को झेलते आ रहे हैं। इसकी भरपाई तो मैं नहीं कर सकती लेकिन उनके लर्निंग गेप को कम करने में तो मदद कर ही सकती हूँ। मेरा रोज़ प्रयास होता कि किसी भी तरह कक्षा-3 के बच्चे अपने स्तर की दक्षताओं को भी हासिल कर लें। और मैं धीरे-धीरे इस ओर अग्रसर भी हो रही थी।

### पुस्तकालय

मुझे अब कक्षा में तीसरा हथियार नज़र आने लगा था, 'पुस्तकालय'। इस साल हमारे स्कूल में कई नई किताबें आई थीं। मैंने सबसे पहले किताबों के लिए कपड़ों के बचे टुकड़ों से एक डिसप्ले बोर्ड या बुक हैंगर तैयार किया क्योंकि रिक में रखी

किताबों को देखना तो दूर, बच्चे उनके टाइटल भी नहीं पढ़ पाते थे। इस डिसप्ले बोर्ड पर बच्चों के साथ मिलकर किताबें जमाने का काम किया ताकि बच्चे भी किताबों को देख सकें। किताबें रखते समय सबसे नीचे कविता की किताबों और बरखा सीरीज़ की किताबों को जमा दिया। और ऊपर के खानों में द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेज़ी, दोनों भाषा में छपी) किताबों को रखा। इन किताबों को कक्षा-3 के बच्चे ज़्यादा आसानी-से देख सकते थे।

इस पुस्तकालय में बाल कैबिनेट द्वारा काफी मदद मिलती थी। बाल कैबिनेट में कक्षा-4 की शिक्षा मंत्री छात्रा झिर्नल का सहयोग सराहनीय रहा। जब भी कक्षा-1 व 2 के बच्चे किताबें पढ़ने का प्रयास करते थे, वे किताबों को अव्यवस्थित रख देते थे। झिर्नल बाद में पुस्तकों को व्यवस्थित रूप से जमाती थी। इसी तरह वह





## खले में सोंप

एक दिन मैं और मेरा भाई ओटने पर बैठ कर पढ़ाई कर रहे थे तो मेरे भाई ने देखा कि हमारे घर के सामने खले खले में से सोंप जा रहा था। उसने मुझे और मम्मी को बताया कि सोंप निकला। हम सोंप को देख कर उर गए। जैसे ही हम लोगों ने ताली बजाई सोंप सामने रुखड़े में छिप गया और मैं और मेरा भाई घर के अंदर जाकर पढ़ाई करने लगे और मेरी मम्मी किचन में खाना बनाने लगी।



झिर्नल द्वारा लिखित अनुभव और चित्र

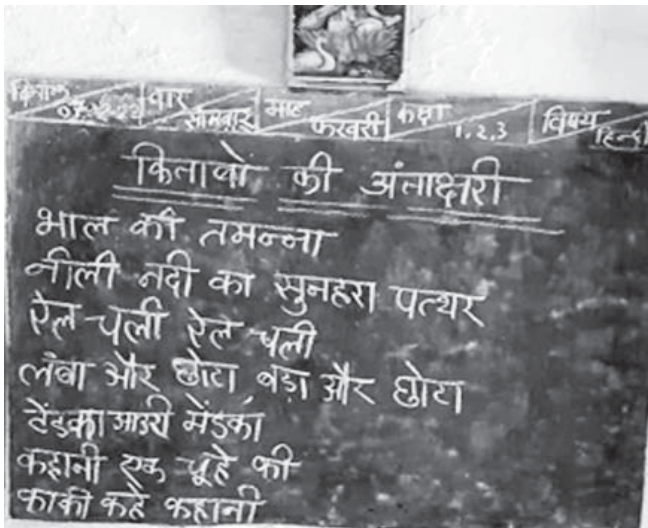
फटी किताबों को स्टेपल करने या गोंद चिपकाकर व्यवस्थित करने आदि में भी सहायता करती थी।

झिर्नल ने बच्चों द्वारा बोली गई निमाड़ी कविताओं को लिखकर, उनके चित्र बनाने में भी बच्चों की और मेरी मदद की। उसे भी किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। वह कहानी की किताबों को पढ़ती और फिर बाद में मुझे अपने शब्दों में उस कहानी का सार भी बताती। एक बार उसने एक घटना को लिखकर मुझे बताया और बाद में हमने उसे ड्राइंग शीट पर बड़े अक्षरों में लिखकर और

झिर्नल द्वारा सुन्दर चित्र बनाकर शाला की दीवार पर सजा भी दिया।

चित्र बनाकर वह अपनी कहानी भी सभी बच्चों के सामने सुनाती है जिससे बच्चों को भी प्रोत्साहन मिलता है तथा वे भी कुछ नया लिखने-पढ़ने हेतु प्रेरित होते रहते हैं।

मुझे महसूस हुआ कि निमाड़ी में संवाद करने से बच्चों की भाषा काफी सुदृढ़ हो रही है। वे हिन्दी भाषा में सुनाई गई कविता-कहानियों को समझकर, सरलता-से निमाड़ी में अनुवाद कर पा रहे हैं और उनका आनन्द अपनी मातृभाषा में ले पा रहे



हैं। शब्दों से नवीन वाक्य भी बना पा रहे हैं।

### किताबों की अन्ताक्षरी

बच्चों को किताबों की ओर आकर्षित करने के लिए मैं रोज़ बच्चों को टोलियों में बाँटकर 'किताबों की अन्ताक्षरी' खेल खिलवाती हूँ ताकि बच्चे अन्तिम अक्षर को सुनें, कहानी के टाइटल के नाम को सुनें और किताब को पलटकर भी देखते रहें।

'किताबों की अन्ताक्षरी' गतिविधि के लिए कक्षा-1 से 3 के बच्चों के तीन समूह बनाए गए। प्रत्येक समूह में वर्ण, शब्द और वाक्य पहचानने वाले बच्चे शामिल थे। फिर सभी समूहों में पुस्तकों को बाँट दिया। प्रत्येक समूह के सभी बच्चों ने बड़े ही

व्यवस्थित रूप से किताबों को क्रमबद्ध जमाया जिससे उनके शीर्षक, लेखक, चित्र आदि स्पष्ट रूप से देख सकें और अन्ताक्षरी में अन्तिम अक्षर से ढूँढ़ने पर उन्हें किताब का शीर्षक आसानी-से मिल सके ताकि वे सबसे पहले मुझे बता पाएँ।

उसके बाद मैंने एक कहानी के शीर्षक 'भाल की तमन्ना' को श्यामपट्ट पर लिखा, तथा सभी समूहों को कहा कि वे इस शीर्षक में आए अन्तिम अक्षर से शुरू होने वाली कहानी की किताब उठाकर मुझे बताएँ तथा उसका शीर्षक पढ़कर सुनाएँ। समूहों द्वारा उदाहरण स्वरूप, निम्नलिखित पुस्तकों के शीर्षकों को अन्ताक्षरी के रूप में पढ़कर सुनाया गया जिसे मैं क्रमबद्ध रूप से



श्यामपट्ट पर लिखती रही:

**नीली नदी का सुनहरा पत्थर,  
रेल चली रेल चली,  
लम्बा और छोटा, बड़ा और छोटा,  
टैंडका आउरी मेंडका,  
कहानी एक चूहे की,  
काकी कहे कहानी**

कभी-कभी किताब के शीर्षक के अन्तिम अक्षर से शुरू होने वाला कोई भी शीर्षक नहीं मिल पाता तो मैं अन्तिम शब्द में आए किसी अन्य अक्षर से शुरू होने वाले कहानी के शीर्षक को खोजने के लिए कहती जिससे बच्चे उस अन्ताक्षरी को पूरा कर पाएँ।

इस अन्ताक्षरी में अक्षर पहचानने वाले बच्चों को यदि किताब का शीर्षक ढूँढ़ने में किसी प्रकार की दिक्कत होती या कोई अन्य किताब उठाकर बताते तो उनके समूह के शब्द और वाक्य पहचानने वाले बच्चे उनकी मदद करते। वे उस अन्तिम अक्षर को ज़ोर-से उच्चारित कर, उसे बताते। बच्चों में मिलकर काम करने की भावना बढ़ रही थी। बच्चे किताबों के शीर्षक से तो परिचित हो ही रहे थे, साथ ही, जब मैं उन शीर्षकों के लिखित रूप को पहचानने के लिए एक-एक करके बच्चों को श्यामपट्ट पर बुलाती और कहती कि 'नीली नदी का सुनहरा पत्थर' या 'कहानी एक चूहे की' कहाँ लिखा है तो वे उन शीर्षकों को ढूँढ़कर मुझे बता पा रहे थे। इस तरह यदि किसी बच्चे ने

अन्ताक्षरी खेलते समय पूरी तरह भागीदारी न की हो तो श्यामपट्ट पर आकर वह अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है। साथ ही, बच्चे किताब को उलट-पलटकर देखकर उसके प्रथम पेज, अन्तिम पेज, उसके शीर्षक, लिखित सामग्री, सुन्दर चित्र तथा कहानी कहाँ से शुरू हुई है, कहाँ खत्म हुई आदि बातों के बारे में भी जान पाते हैं। कुछ बच्चे कहानी के शीर्षक को पढ़ने के बाद, उससे अनुमान लगाते कि कहानी के अन्दर क्या होगा और उनमें पढ़ने की जिज्ञासा पैदा होती।

### परिवेश की बातें

बच्चों के परिवेश में निहित ज्ञान को शाला में पाठ्यक्रम के साथ जोड़ने के प्रयास में मैंने एक गतिविधि के बारे में सोचा। बच्चे रोज़ अपने घर-परिवेश के अनुभवों को मुझसे साझा करते थे, परन्तु सभी बच्चों के साथ यह क्रियाकलाप नहीं हो पाता था जिससे हम खुलकर उसपर चर्चा नहीं कर पाते थे। इसलिए हमने प्रार्थना सभा में शाला के सभी बच्चों को अपने अनुभव साझा करने के मौके उपलब्ध करवाने के लिहाज़ से, समाचार सुनाने की एक गतिविधि की शुरुआत की।

ये समाचार टीवी या अखबार के समाचार नहीं थे बल्कि उनके दैनिक जीवन में, आसपास परिवेश में होने वाली घटनाओं से सम्बन्धित समाचार

थे। प्रतिदिन जब प्रार्थना होती, उसके पश्चात् समाचार सुनाने हेतु जो भी बच्चा अपनी मर्जी से आता, वह अपने घर-परिवेश की किसी भी घटना का वर्णन करता और फिर सभी बच्चे उस पर चर्चा करते। यह चर्चा प्रार्थना सभा में भी हो सकती थी या कक्षा में आने के बाद भी हो सकती थी।

उदाहरण स्वरूप, कक्षा एक के बच्चे अरिहंत ने अपने घर में बिल्ली के मरने की खबर सुनाई। उसके साथ चर्चा करते हुए हमने पूछा, “बिल्ली कैसे मरी?” उसने कहा, “वह ऊपर से कूदते समय गिर गई थी, शायद इसलिए मर गई हो।” अन्य बच्चों से बिल्ली के मरने की वजह पूछने पर किसी ने बताया कि उसने कुछ खराब खा लिया होगा। मैंने अन्दाज़ा लगाया, “बिल्ली, चूहे खाती है और यदि चूहा बीमार हो गया होगा तो शायद बीमार चूहे को खाकर बिल्ली मर गई हो।” इस प्रकार हमने अनुमान लगाने की कोशिश की कि बिल्ली की मौत कैसे हुई होगी। फिर हमने अरिहंत से पूछा, “बिल्ली के मरने के बाद उसका क्या किया?” तो उसने कहा, “उसको मेरी दादी घर से दूर, कहीं नदी किनारे फेंक आई हैं।”

इस पर मैंने सभी बच्चों से पूछा कि “क्या हम जानवरों के मरने पर उन्हें जलाते या गाड़ते नहीं हैं?” बच्चों ने कहा, “हम इन्सानों को ही जलाते हैं या गाड़ते हैं। जानवरों के

साथ हमने ऐसा करते हुए नहीं देखा है।” फिर मैंने पूछा, “जानवरों को ऐसे ही खुले में फेंकने पर आसपास का पर्यावरण गन्दा हो जाता है, बदबू भी आती है, उसे कौन साफ करता होगा?” इस पर बच्चों से चर्चा करने पर यह बात सामने आई कि कुत्ता, पक्षी, कीड़े-मकोड़े उस मरे हुए जानवर को खा जाते हैं जिससे उसका शरीर नष्ट हो जाता है। फिर मैंने कहा, “इसका मतलब यह है कि जानवर हमारे मित्र होते हैं। वे हमारे वातावरण को साफ-स्वच्छ रखने में हमारी मदद करते हैं।” इस प्रकार हमारी चर्चा से बच्चों को नवीन जानकारी प्राप्त हुई, साथ ही कक्षा-3 की पर्यावरण अध्ययन की किताब के पाठ ‘डाल-डाल पर, ताल-ताल पर’ तथा ‘हमारे साथी जानवर’ पर भी बच्चे अपने पूर्व-ज्ञान के आधार पर अपनी बात कह पा रहे थे।

इसी प्रकार किसी अन्य दिन छात्रा झिर्नल द्वारा यह समाचार सुनाया गया कि उसके पापा आज ही अहमदाबाद से आए हैं। मैंने पूछा, “वे किस वाहन से सफर करके आए हैं?” तो उसने कहा कि “बस से आए हैं।” फिर हमने चर्चा की कि अहमदाबाद से हमारे गाँव झिरन्या आने के लिए हम कौन-कौन-से वाहनों का उपयोग कर सकते हैं। बच्चों ने बताया कि हम रेल से और हवाई जहाज़ से भी आ सकते हैं। फिर मैंने पूछा, “कौन-से वाहन से आने पर हमें सबसे ज्यादा

खर्चा होगा, किस वाहन से आने पर हमें सबसे ज़्यादा महँगा टिकट लेना होगा?” बच्चों ने कहा कि “हवाई जहाज़ से सफर करने पर ज़्यादा पैसे खर्च होते हैं तथा रेल गाड़ी से आने में हमें कम पैसा लगेगा।” इस प्रकार झिर्नल द्वारा सुनाए गए समाचार से हमने यातायात के साधनों के बारे में चर्चा की।

इस प्रकार समाचार सुनाने की गतिविधि से बच्चों में प्रार्थना सभा में बेहिचक अपनी बात कह पाने की हिम्मत आई, उनका हौसला बढ़ा।

साथ ही, आसपास के परिवेश के बारे में बच्चों की समझ विकसित हो रही थी और वे गहराई-से उसपर चर्चा कर पा रहे थे।

\*\*\*

अभी तक बच्चों के साथ जो कर पाई हूँ, उससे एक भरोसा तो जागा है कि जल्द ही बच्चों को मानसिक रूप से मज़बूत बना सकती हूँ और पढ़ाई में हुए नुकसान को भी पाटा जा सकता है। किसी ने ठीक ही कहा है - चाह है तो राह है, वरना सब वीरान है।

**माया पाटीदार:** शासकीय प्राथमिक विद्यालय, झिरन्या (गुलावड), ब्लॉक - महेश्वर, ज़िला - खरगोन (मध्यप्रदेश) में अध्यापन कार्य कर रही हैं। इनकी रुचि बच्चों के साथ सीखने-सिखाने के अलावा सिलाई, बुनाई, चित्रकला, रंगोली आदि में है। इनका उपयोग वे कक्षा शिक्षण में काफी करती हैं।

**सभी फोटो: माया पाटीदार।**

विशेष आभार: इस लेख को तैयार करने में मदद के लिए मैं नंदा शर्मा, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, महेश्वर जो पूर्ववत *एकलव्य* के साथ काम करती थीं, की आभारी हूँ।

